6

यीशु की वापसी पर पाई जाने वाली गलत शिक्षाएं

सिखाए जाने वाले बहुत से विचार यीशु की वापसी के बारे में बाइबल की शिक्षा से मेल नहीं खाते। इनमें (1) रैपचर, (2) यीशु की भविष्यवाणी की गलत व्याख्याएं, (3) ‘‘70 ईस्वी की शिक्षा’’ और (4) मसीह विरोधी और अरमगिदोन के बारे में धारणाएं शामिल हैं। आइए इन शिक्षाओं पर बाइबल की रोशनी में विचार करते हैं।

क्या रैपचर होगा?

हमने यीशु के द्वितीय आगमन के समय होने वाली घटनाओं से जुड़ी घटनाओं पर बाइबल की शिक्षा को देखा है। प्रीमिलेनियनिलट यानी यीशु की वापसी से पहले पृथ्वी पर उसके एक हज़ार वर्ष के राज की शिक्षा को मानने वाले लोग कई निष्कर्षों पर पहुंचे हैं। (1) यीशु अचानक और गुप्त ढंग से बादलों पर जीवित धर्मियों और मर चुके धर्मियों को दिखाई देगा, और वे उसके प्रकट होने पर उठा लिए जाएंगे। (2) वह उन्हें सात वर्ष तक स्वर्ग में अपने साथ रखने के लिए उन्हें ‘‘रैपचर’’ करेगा। (3) इन सात वर्षों के दौरान, मसीह विरोधी राज करेगा और बहुत बड़ा क्लेश होगा। (4) इस काल के दौरान यहूदी लोग मसीह में परिवर्तित होंगे और वे बहुत से लोगों को भी परिवर्तित करेंगे। (5) सात वर्षों के बाद मसीह विरोधी अपनी सेनाओं को अरमगिदोन के बड़े युद्ध में पवित्र लोगों के विरुद्ध करेगा। (6) यीशु पवित्र लोगों के साथ वापस आकर मसीह विरोधी को नाश करेगा, दुष्टों का न्याय कर उन्हें दण्ड देगा और एक हज़ार वर्ष तक यरूशलेम से दाऊद के सिंहासन पर सारी पृथ्वी पर राज करेगा।

रैपचर की यह शिक्षा कई बातों में बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं से भिन्न है:

रैपचर की शिक्षा को बरकरार रखने के लिए एक पसंदीदा हवाला इस्तेमाल किया जाता है, 1 थिस्सलुनीकियों 4:14-17, जिसमें कहा गया है कि यीशु ‘‘स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी।’’ परन्तु यदि यीशु ने चुपके से आने की योजना बनाई होती, तो निश्चय ही वह इतने शोरगुल की अनुमति न देता। उसका आना अचानक होगा, परन्तु गुप्त में नहीं।

यूहन्ना 6:40 के अनुसार, धर्मी लोगों की देहें अन्त के दिन जिलाई जाएंगी। ऐसा

''अन्तिम दिन'' नहीं हो सकता था, क्योंकि प्रीमिलेनियलिस्ट कहते हैं कि रैपचर की शिक्षा के अनुसार यह हज़ार वर्ष के राज्य के बाद अन्त से कुछ समय पूर्व सात वर्ष पहले होगा।

यूहन्ना 5:28, 29 कहता है कि धर्मी और दुष्ट दोनों एक ही समय में एक साथ उसी घड़ी जिलाए जाएंगे। रैपचर की शिक्षा धर्मियों के पुनरुत्थान को एक हज़ार वर्ष के राज से पहले बताती है और दुष्टों के पुनरुत्थान को इसके बाद। बाइबल दो अलग-अलग पुनरुत्थानों के विषय में कुछ नहीं कहती।

जंगली बीज के दृष्टांत में यीशु ने बताया कि दुष्टों और धर्मियों दोनों की युग के अन्त में एक ही समय में कटाई की जाएगी। दुष्टों को लोगों में से इकट्ठे करके दण्ड दिया जाएगा। फिर धर्मी यीशु के राज्य में चमकेंगे (मत्ती 13:24-30, 36-43)।

जाल के दृष्टांत में यीशु ने जंगली बीज के दृष्टांत वाला सबक ही दिया। उसने कहा, ''जगत के अन्त में ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे'' (मत्ती 13:47-50)। यह सिखाने के बजाय कि धर्मियों को दुष्टों में से निकाला जाएगा, यीशु ने सिखाया कि दुष्टों को धर्मियों में से ले लिया जाएगा।

2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10 में पौलुस ने यीशु के दृष्टांतों में मिलने वाली सच्चाई ही बताई कि यीशु के दोबारा आने पर दुष्टों को दण्ड दिया जाएगा। आयत 8 में पौलुस ने कहा कि यीशु ''जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते [यीशु] उनसे पलटा लेगा।'' आगे आयत 9 में उसने कहा, ''वे ... अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।''

पौलुस ने सिखाया कि यीशु जी उठने वाले बहुत से भाइयों में से पहला था (रोमियों 8:29)। अगले पुनरुत्थान में उसके दोबारा आने पर उसके लोग होंगे। फिर 1 कुरिन्थियों 15:22-27 के अनुसार यीशु के राज्य को परमेश्वर को लौटा देने पर अन्त आएगा। इस आयत में एक हज़ार वर्ष के राज्य के बाद रैपचर के लिए समय नहीं दिया गया। यीशु के वापस आने के समय सब को पृथ्वी पर से ले लिए जाएगा और यही अन्त होगा।

2 पतरस 3:3-13 में पतरस ने बताया कि यीशु के वापस आने पर आकाश और पृथ्वी गरमी से पिघल जाएंगे। यह आयत पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष के राज्य के बाद रैपचर या पृथ्वी के अस्तित्व का समय नहीं देती, जिसमें रैपचर के बाद ऐसी घटनाएं हो पाएं।

रैपचर की शिक्षा दानिय्येल 2 और 9 में सांकेतिक आयतों तथा मत्ती 24, मरकुस 13 और लूका 21 में यीशु की भविष्यवाणियों की गलत व्याख्या के कारण बनी है। स्पष्टतया कोई भी शिक्षा जो वचन की अन्य स्पष्ट शिक्षाओं के विपरीत है, गलत ही होगी।

यरूशलेम का विनाश और यीशु का आगमन

मत्ती 24, मरकुस 13 और लूका 21 में यीशु की भविष्यवाणियों का अर्थ बहुत से लोगों द्वारा भविष्य में यीशु के दूसरे आगमन के लिए किया जाता है। कुछ लोग, जिनकी शिक्षा पर बाद में विचार किया जाएगा, इनमें से लगभग सभी बातों को सत्तर ईस्वी में घट चुकी घटनाओं पर लागू करते हैं। इनमें से कोई भी व्याख्या सही नहीं है, क्योंकि सुसमाचार

की पुस्तकों में यीशु की भविष्यवाणियों में दोनों बातें शामिल हैं। मत्ती 24:3 में यीशु मन्दिर के विनाश, अपने आने के चिह्न और युग के अन्त के बारे में पूछे गए चेलों के प्रश्नों का उत्तर दे रहा था। लूका ने यरूशलेम के विनाश सहित की जाने वाली यीशु की भविष्यवाणी को ही लिखा है, जबकि मत्ती और मरकुस ने यीशु के द्वितीय आगमन को भी शामिल किया है।

मत्ती 24 के अपने संदेश के आरम्भ में यीशु ने यरूशलेम के विनाश की ओर ले जाने वाली घटनाओं का वर्णन किया (आयतें 4-14)। उसने कहा कि जब लोग यरूशलेम को सेनाओं से घिरा देखें, तो वे इसके विनाश के साथ होने वाले क्लेश से बचने के लिए नगर से भाग जाएं (आयतें 15-22; लूका 21:20-24)। फिर यीशु ने अपने अनुयायियों को यरूशलेम और इस्राएलियों के पतन के साथ जुड़ी घटनाओं के दृष्टांत और जानकारी दी (आयतें 23-34)। इसके बाद, उसने अपने द्वितीय आगमन पर चर्चा की (आयतें 36-51)।

आयत 34 कई कारणों से उसके संदेश में एक विराम का संकेत देती है:

आयत 34 से पहले, अर्थात पहले भाग में कही, यीशु की सभी बातें "इस पीढ़ी" के जीवन काल में, यानी उनके जीवन काल में पूरी हो जानी थीं, जिनके साथ वह बातें कर रहा था। अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने उन लोगों को जिनसे वह बात करता था "इस पीढ़ी" कहा था (देखें मत्ती 11:16; 12:41, 42, 45; 23:36; मरकुस 8:12; लूका 11:29-32, 50, 51; 17:25; विशेषकर मत्ती 23:36 देखें)। इस मामले में एक अपवाद अजीब होगा।

पहले भाग में, उसने "उन दिनों" (आयतें 19, 22, 29) कहा; आयत 34 के बाद, दूसरे भाग के सम्बन्ध में, उसने "उस दिन" कहा (आयत 36)। यीशु ने अन्तिम न्याय के लिए अपने आने के लिए "उस दिन" या "दिन" अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया (देखें मत्ती 7:22; 1 कुरिन्थियों 1:8; 5:5; 2 कुरिन्थियों 1:14; फिलिप्पियों 1:6, 10; 2:16; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:2; 2 तीमुथियुस 1:18; 4:8; 2 पतरस 3:10)।

पहले भाग में यीशु ने यरूशलेम के विनाश से पहले होने वाली घटनाओं का वर्णन किया (आयतें 5-14) और वह चिह्न बताया, जिससे संकेत मिलना था कि उसका विनाश निकट है (आयत 15; लूका 21:20-24 से तुलना करें)। दूसरे भाग के "उस दिन" अर्थात उसके दोबारा आने पर (आयत 36) कोई चिह्न या चेतावनी नहीं होगी, बल्कि वह जल प्रलय और चोर के आने की तरह आएगा (आयतें 36-43)।

पहले भाग में यीशु ने कहा कि चिह्न को पहचानकर समझने वाले भाग जाएं (आयत 16)। इस चिह्न और चेतावनी के कारण मसीही लोग यरूशलेम और यहूदिया से भाग कर यरदन नदी के पार सुरक्षा के लिए पेला में चले गए।[1] दूसरे भाग में वर्णित घटनाएं इतनी अप्रत्याशित होंगी कि किसी को भी समझ नहीं आएगा कि क्या हो गया है (आयत 39)। कोई भाग नहीं सकेगा, क्योंकि इससे पहले कोई चिह्न नहीं दिया जाएगा। इसलिए हमें हर समय तैयार रहने की आवश्यकता है (आयतें 37-51)।

यरूशलेम के विनाश से पहले की घटनाओं के यीशु के वर्णन को उसके द्वितीय आगमन के लिए इस्तेमाल करने वाले यीशु की शिक्षा को गलत ढंग से लागू करते हैं (आयतें 4-34)। इन्हें उसके द्वितीय आगमन के लिए लागू नहीं किया जा सकता, बल्कि

वे तो इस्राएल और यरूशलेम के पतन का विवरण बताने वाली घटनाएं हैं।

कुछ लोग मत्ती 24:29-31 के कारण इस व्याख्या पर आपत्ति करते हैं। उन्हें समझ नहीं आता कि ये आयतें अक्षरश: नहीं, बल्कि सांकेतिक अर्थ में लेनी चाहिए, क्योंकि इनमें राष्ट्रों के पतनों का वर्णन करने के लिए पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की अलंकारिक भाषा भरी पड़ी है (देखें यशायाह 13:9, 10; 34:5-10; यहेजकेल 32:7, 8; योएल 2:10)। मत्ती 24:30 में यरूशलेम के पतन में भी यीशु का ''आना'' उसके द्वितीय आगमन के रूप में नहीं, बल्कि इस्राएल कौम पर दण्ड देने के लिए उसके आने के रूप में माना जाता है। ''इन बातों'' (मत्ती 24:33) को देखकर उन्हें अहसास होना था कि वह निकट है, यरूशलेम का विनाश करने को तैयार। उन्हें आरम्भिक मसीहियों की तरह ही भाग जाने का पता होना था। इस भविष्यवाणी के कारण, उन्हें समझ थी कि ये चिह्न देखकर वे जान सकते हैं कि वह यरूशलेम पर बदला लेने को तैयार हैं। ''उस दिन'' अर्थात उसके द्वितीय आगमन के दिन, भागने का कोई चिह्न, चेतावनी या अवसर नहीं होगा।

70 ईस्वी वाली शिक्षा

कुछ लोग मत्ती 24 की *सभी* और दूसरी आयतों का इस्तेमाल 70 ईस्वी में हुए यरूशलेम के विनाश के लिए करते हैं। उनका मानना है कि यीशु उस समय वापस आया, सभी मृतकों को जिलाया और उनका न्याय किया गया था। तब से उनका मानना है कि सब लोगों का न्याय मृत्यु के समय ही हो जाता है और उन्हें तुरन्त ही स्वर्ग या नरक में भेज दिया जाता है।

अभी-अभी दी गई जानकारी से इस बात का संकेत मिलता है कि यह शिक्षा गलत है। इसके अलावा, ''अन्तिम दिन'' और इसके आस-पास की घटनाओं को इस भ्रमित विचार से नहीं मिलाया जा सकता।

यीशु ने कहा कि उसमें विश्वास रखने वाले ''अन्तिम दिन'' जिलाए जाएंगे (यूहन्ना 6:39, 40)। यीशु की कही बातें ''पिछले दिन'' (यूहन्ना 12:48) न्याय करने का आधार होंगी। यरूशलेम का विनाश ''अन्तिम दिन'' नहीं हो सकता, क्योंकि इसके विनाश के बाद कई और दिन आए। ''अन्तिम दिन'' जिसकी बात यीशु ने की, वह अवश्य ही पृथ्वी के इतिहास का अन्तिम दिन यानी जिस दिन इसका नाश होगा। पृथ्वी के अपनी धुरी के इर्द-गिर्द घूमे बिना, और दिन नहीं हो सकता। वह ''अन्तिम दिन'' ही वह दिन होगा जब मुर्दे जिलाए जाएंगे और उनका न्याय होगा, और पृथ्वी नष्ट की जाएगी। 70 ईस्वी का दिन अन्तिम दिन नहीं था। ''अन्तिम दिनों'' (2 पतरस 3:3) की घटनाएं यीशु के आने और आकाश और पृथ्वी के विनाश से पहले होंगी, जिसके बाद, ''अन्तिम दिन'' आएगा।

मसीह विरोधी और अरमगिदोन

कुछ धार्मिक गुट मसीह विरोधी और अरमगिदोन के युद्ध पर इतना अधिक ज़ोर देते हैं कि हमें इन दोनों प्रसिद्ध विषयों पर बात करनी ही पड़ेगी।

यूहन्ना ने ''मसीह का विरोधी'' की बात लिखी है, परन्तु यह कहा है कि उनमें से

''बहुत से'' (1 यूहन्ना 2:18; 2 यूहन्ना 7) यह इनकार करते हुए आएंगे कि यीशु परमेश्वर की ओर से है (1 यूहन्ना 2:22; 4:3) और यह कि वह शरीर में होकर आया (2 यूहन्ना 7)। वचन में इन्हें न तो संसार की सेना के सैनिक अगुवे कहा गया है, जो यीशु के विरुद्ध लड़ेंगे और न ही 2 थिस्सलुनीकियों 2:3 की तरह ''विनाश का पुत्र,'' बल्कि उन्हें धार्मिक धोखेबाज कहा गया है (2 थिस्सलुनीकियों 2:10; 2 यूहन्ना 7)।

अरमगिदोन (प्रकाशितवाक्य 16:14-16) का अर्थ सम्भवतया मगिदो पर्वत अर्थात वह स्थान है जहां कई निर्णायक युद्ध लड़े गए थे, जहां इस विचार को मानने वालों का कहना है कि मसीह-विरोधी एक हज़ार वर्ष का उसका राज आरम्भ होने से पहले यीशु के विरुद्ध लड़ने के लिए सब दुष्टों को इकट्ठा करेगा। प्रकाशितवाक्य 16:14-16 कहता है कि युद्ध के लिए मसीह विरोधी नहीं, बल्कि दुष्टात्माएं इकट्ठी होंगी। यह युद्ध सच्चाई और बुराई के बीच अलंकारिक युद्ध है न कि भौतिक।

मसीह विरोधी तो धार्मिक धोखेबाज हैं; यदि वे (सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से) अरमगिदोन से जुड़े हुए हैं, तो उन्हें सच्चाई के विरुद्ध आत्मिक युद्ध में लगे होने के रूप में देखा जाना चाहिए, जो लम्बे समय से लड़ा जा रहा है, न कि एक समय में होने वाली घटना में। बाइबल ऊपर दी गई दोनों लड़ाइयों में कोई सम्बन्ध नहीं बनाती, इसलिए इनमें सम्बन्ध बनाना केवल अनुमान है।

सारांश

पवित्र शास्त्र हमें केवल एक ही जानकारी देता है, जो मसीह के द्वितीय आगमन के बारे में हमारे पास है। उसके वापस आने की हमारी समझ में हमें परमेश्वर के वचन से अगुआई पानी चाहिए न कि मनुष्य के अनुमानों से।

टिप्पणी

[1]यूसबियुस, *चर्च हिस्टरी,* 3.5.